Research scholar: Arundhati
Supervisor: prof. Durga Prasad Gupt
Department: Hindi
Title: SAMKALEEN KAVITA KENDRIT ALOCHANA KA ADHYAYAN

संक्षिप्त शोध सार

समकालीन कविता आलोचना काव्य-सृजन के पारंपरिक अनुतान के विपरीत सहस्त्राब्दी के संक्रमण स्थल पर नए जटिल ताने-बाने में बुनती कविता के रेशों के संश्लिष्ट बनावट की पहचान का प्रयास है। आलोचना में नए बौद्धिक हस्तक्षेपों के मध्य आलोचना वैचारिक अनुशासनात्मक अध्ययनों के करीब होती गई एवं विधाओं की केन्द्रिकता टूटी, विशेषकर आलोचना में काव्य-अध्ययन के माध्यम से युग-विवेचन के स्थान पर अनुशासन एवं वैचारिक-अध्ययनपरक आलोचना का उद्भव एवं प्रसार होना आरंभ हुआ। इस नई स्थिति के मध्य कविता में सृजनात्मकता की नई जीवटता भी दिखाई देती है और इसी समय कविता आलोचना अपनी सीमाओं से लड़ते हुए कविता के लिए पुन: नवीन ऊर्जा से कविता को समझने-बुझने और विवेचित करने का प्रयास करती है। समकालीन कविता की लंबी अवधि में आलोचना का यह प्रयास कविता काल के उत्तरोत्तर समय में जाकर स्पष्ट होता है। कविता आलोचना में बिखराव, भटकाव एवं शिथिलता का भी दौर आता है। यह सभी स्थितियां समकालीन कविता काल में ही दिखती हैं इसलिए कविता आलोचना के विभिन्न सोपानों एवं चरणों को स्पष्ट करते हुए इस युग की काव्य-आलोचना के महत्त्व को समझा जा सकता है।

समकालीन कविता आलोचना की पीठिका में 'नई कविता' के दौर में मुखरित वैचारिक बहसों की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। आरंभिक बहसों ने साहित्य में पक्ष-प्रतिपक्ष के निर्धारण के साथ कविता की भूमिका और उद्देश्य-उपादेयता संबंधी नए मानदंडों को स्थापित किया जोकि पहले काव्य-आलोचना में इस प्रकार विवेच्य नहीं थे। समकालीन कविता का आरंभ ही कविता के उद्देश्यात्मक दिशा निर्धारण के नव-प्रयासों की पहचान की कोशिश कही जा सकती है। इसके बाद कविता अपने समय की पहचान जिस सजगता के साथ करती है वह उल्लेखनीय है। समकालीन कविता के इस लंबे दौर में अपने समय से मुठभेड़ की जो जीवटता विकसित होती है वही इस युग की कविता का सबसे मुखर गुण भी है। यही कारण है कि आलोचना में भी समय और कविता के संश्लिष्ट संबंधों की पहचान का प्रयास ही दिखता है जिसके लिए कविता से अधिक आलोचना इस युग में मुखरित विभिन्न वैचारिक अध्ययनों एवं मूलगामी अध्येताओं के पाठों की तरफ उन्मुख होती है।

आलोचना और कविता के संबंधों के संदर्भ में यह काल जितना जटिल है उतना ही उर्वर भी है। कविता की परिधि में जो विस्तार इस युग में दिखता है वह मूलगामी विमर्शों एवं पाठों के उदय के कारण भी संभव हुआ है। कविता की संवेदना और शिल्प के पुरातन मानदंडों की जड़ता पर इस युग की आलोचना प्रहार करती है और समयानुकूल कसौटियों के अनुरूप मानदंडों के निर्धारण पर बल देती है। काव्य-विधा में शिल्प का वर्चस्व खंडित होता है और संवेदना के अनुरूप सहज शैल्पिक कौशल को वरीयता मिलना प्रारंभ हुआ। आलोचना की मुख्यधारा में कविता से अधिक वैचारिक बहस और सैद्धांतिकियों के प्रति अतिशय आकर्षण के कारण आलोचना कविता से विमुख प्रतीत होती है। इसी निर्वात के कारण सर्जक-आलोचकों की उपस्थिति काव्य-सर्जना के नए सूत्रों को समझने के लिए आवश्यक धारा के रूप में मुखरित होती है। जिस तरह इस काल में कवियों ने कविता को समझने और उसके

ताने-बाने को स्पष्ट करने के लिए एक जरूरी हस्तक्षेप किया वह इस युग की आलोचना की उपलब्धि भी कही जा सकती है।

समकालीन कविता आलोचना अपनी पूर्ववर्ती आलोचना परंपरा से अलग मूल्यांकन की अपेक्षा विवेचना और विमर्शोन्मुख होती है। इस युग की काव्य-आलोचना कविता के माध्यम से समय को समझने की अपेक्षा विभिन्न माध्यमों एवं विवेचनाओं से कविता में व्यक्त समय की अभिव्यक्ति को विवेचित करती है। इस युग में उपस्थित सर्जना के संकट और अभिव्यक्ति की समस्या से जूझने का प्रयास भी करती है। ऐसे समय में जब वर्चस्व के नकार के मध्य पूंजीवाद ने छद्म विकेंद्रीकरण के बहाने वर्चस्व को सर्वव्यापी बनाया है उस युग में कविता अब भी जीवट संभावना के रूप में दिखाई देती है और तमाम सीमाओं के बावजूद इस युग की कविता आलोचना इस जीवटता को पहचानने और बचाए रखने का प्रयास है।